राम मनोहर लोहिया

1/ डॉ॰ राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीतिक एवं राजनीतिक चिन्तन के एक श्रेष्ठ प्रतिनिधि विचारक एवं राजनेता थे। राजनीतिक अधिकारों के पक्षधर रहे डॉ॰ लोहिया ऐसी सामाजिक व्यवस्था चाहते थे जिसमें सभी की बराबर की हिस्सेदारी रहे। वह कहते थे कि - सार्वजनिक धन समेत किसी भी प्रकार की सम्पत्ति प्रत्येक नागरिक के लिए होनी चाहिए। उन्होंने एक ऐसी टीम खड़ी की जिसने समाजवादी आन्दोलन का असर लम्बे समय तक महसूस किया जाता। डॉ॰ लोहिया का पूरा जीवन सादगी भरा था। गरीब - अमीर के बीच बढ़ती खाई को पाटने में उनका योगदान अहम है।

भारतीय समाजवाद के आकाश में डॉ॰ राम मनोहर लोहिया का उदय एक ऐतिहासिक घटना थी। उनका सम्पूर्ण जीवन सदियों से उपेक्षित रहे लोगों के प्रति समर्पित था, फिर चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या वर्ग का हो। यही कारण है कि समाजवाद के पुरोधा के रूप में उनका नाम हमेशा अग्रणी रहा है। समाजवादी चिन्तक प्रो॰ रामगोपाल यादव द्वारा प्रणीत यह पुस्तक डॉ॰ लोहिया के अक्षय व्यक्तित्व एवं कृतित्व का बहुआयामी मूल्यांकन प्रस्तुत करती है। डॉ॰ लोहिया की वैविध्य दृष्टि की व्यापकता का संज्ञान करती एवं सामाजिक - राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिबिम्ब करती हुई यह कृति एक नया चिन्तन प्रस्तुत करती है। डॉ॰ लोहिया का जीवन - संघर्ष निरन्तर सामाजिक या उत्थानवादी चेतना के हृदय को दिखाता है। आर्थिक गैर-बराबरी दूर करने और समतामूलक समाज बनाने में उनका चिन्तन मार्क्सवादियों से भिन्न था। डॉ॰ लोहिया बराबरी (समानता) में विश्वास करते थे और भारत की जातिप्रथा के प्रखर विरोधी थे। आजादी के बाद उन्होंने खुलकर पं॰ जवाहर लाल नेहरू की नीतियों का विरोध किया। वे आरक्षण का समर्थन करते थे और महिला सशक्तिकरण की वकालत करते थे। राममनोहर लोहिया जी के बारे में एक बार गाँधी जी ने कहा था कि - "मैं शान्ति से नहीं बैठ सकता, जब मैं राम मनोहर लोहिया और जय प्रकाश नारायण को जेल में देखता हूँ, मैं उनसे साहसी और स्पष्टवादी व्यक्ति को नहीं जानता हूँ।"

राम मनोहर लोहिया अक्सर कहा करते थे कि सत्ता

सदैव जड़ता की ओर बढ़ती है और निरन्तर निहित स्वार्थों और भ्रष्टाचारों को पनपाती है। विदेशी सत्ता भी यही करती है। अन्तर केवल इतना है कि उनके शोषण का तरीका अलग है। किन्तु जहाँ तक चरित्र का सवाल है चाहे ~~विदेशी है~~ विदेशी शासन है या देशी दोनों की प्रवृत्ति भ्रष्टाचार को विकसित करने में व्यक्त होती है। उन्होंने जनता का ~~आह्वान~~ आह्वान करते हुए कहा था कि देशी शासन को निरन्तर जागरुक और चौकस बनाना है तो प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने राजनीतिक अधिकारों को समझे और जहाँ कहीं भी उन पर चोट होती हो या हनन होते हों उनके विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाए।

लोहिया ने वेतनहीन समाज के निर्माण के लिए स्वतन्त्रता को चिरस्थायी होना जरूरी बताया था। उनका निष्कर्ष था कि सत्यनिष्ठा और न्यायप्रियता पर आधारित शासनतन्त्र ही लोक व्यवस्था के लिए श्रेयस्कर साबित हो सकता है। व्यवस्था में बदलाव के लिए लोहिया ने सामाजिक संरचना में आमूलचूल परिवर्तन की बात कही थी। उनका मानना था कि गैर बराबरी को खत्म करके ही समतामूलक समाज का निर्माण किया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म करके समाजवाद की स्थापना पर बल दिया। उन्होंने देश के सामने समाजवाद का सगुण और ठोस रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि 'समाजवाद गरीबी के समान के समान बंटवारे का नाम नहीं बल्कि समृद्धि के अधिकाधिक वितरण का नाम है। लोहिया का स्पष्ट मानना था कि आर्थिक बराबरी होने पर जाति व्यवस्था अपने आप खत्म हो जायेगी। और सामाजिक बराबरी स्थापित होगी। उन्होंने सुझाव दिया कि जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए सामाजिक पर आर्थिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए जाति व्यवस्था के विरुद्ध लड़ाई द्वेष ~~का~~ के वातावरण में नहीं होनी चाहिए। लोहिया अकसर चिन्तित रहते थे कि आजादी के उपरान्त भारतीय समाज का स्वरूप क्या होगा?।

Page 3 — वे समाज के अन्तिम पांत के अन्तिम व्यक्ति के लोकतांत्रिक अधिकारों के हिमायती थे। लोहिया जी स्त्री पुरुष के बराबरी और समानता के प्रबल हिमायती थे। वे अक्सर स्त्रियों को पुरुष पराधीनता के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत देते थे।

साथ ही लोहिया भारतीय भाषाओं को समृद्ध होते देखना चाहते थे। उन्हें विश्वास था कि भारतीय भाषाओं के समृद्ध होने से देश में एकता मजबूत होगी। लोहिया का दृष्टिकोण विश्वव्यापी था।

साथ ही लोहिया को भारतीय संस्कृति से न केवल अगाध प्रेम था बल्कि देश की आत्मा को उन जैसा हृदयंगम करने का दूसरा नमूना भी नहीं है मिलेगा। समाजवाद की यूरोपीय सीमाओं को तोड़कर उन्होंने एक विश्व-दृष्टि विकसित की। उनका विश्वास था कि पश्चिमी विज्ञान और भारतीय अध्यात्म का असली व सच्चा मेल तभी हो सकता है जब दोनों को इस प्रकार संशोधित किया जाए कि वे एक-दूसरे के पूरक बनने में समर्थ हो सकें।

निष्कर्ष! - राममनोहर लोहिया के बारे में यह जा सकता है कि लोहिया एक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं दार्शनिक विचारों के क्षेत्र में बहुआयामी प्रतिभा के व्यक्तित्व से परिपूर्ण थे। वे समाज सुधारक थे हैं: किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध वे सदैव संघर्षशील हैं। उनका राष्ट्रवाद, समाजवाद संकीर्ण नहीं वरन् उदार एवं देशप्रेम के प्रति समर्पित है ये अन्तर्राष्ट्रवाद का पूरक है। उनके लोकतन्त्र की आत्मा का निवास लोकतांत्रिक समाजवाद में है जिसमें व्यक्ति की भौतिक एवं नैतिक आवश्यकताओं की सहज पूर्ति होती है, वे व्यक्ति की समानता, स्वतन्त्रता एवं उसकी गरिमा के पुजारी हैं। इसलिए लोहिया को व्यक्ति भी मानवतावादी, एवं दार्शनिक के रूप में हमारे सामने हैं।